Journal of Medicinal Plants Studies
www.PlantsJournal.com

ISSN (E): 2320-3862
ISSN (P): 2394-0530
NAAS Rating 2017: 3.53
JMPS 2017; 5(3): 110-113
© 2017 JMPS
Received: 16-03-2017
Accepted: 17-04-2017

विजित कुमार
शोधार्थी (पीएच.डी.) संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

Correspondence
विजित कुमार
शोधार्थी (पीएच.डी.) संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

सोमलता में निहित औषधीय तत्त्व

विजित कुमार

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है, जो अपने हित और अहित के विषय में हमेशा से ही जागरुक रहा है। उसकी जीवनशैली को प्रभावित करने वाले संसार के जितने भी पदार्थ हैं उन सबके गुण एवं धर्म आज भी वही हैं जो अतीत में थे इस कारण स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालने वाले तत्त्वों की खोज मनुष्य हमेशा से ही करता रहा है, जिसकी जानकारी ऋग्वेद से मिलती है ऋग्वेद में मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक विकास सम्बन्धी मार्मिक तत्त्वों को बहुत सूक्ष्म रूप से स्पष्ट किया गया है। मनुष्य जिन वनस्पतियों से रोग रहित हो सकता है उनका वर्णन किया गया है। वैदिक काल में मानव के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ से लेकर वेदिनिर्माण एवं कृषि से लेकर निवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं में वनस्पतीय औषधियों की प्रधानता थी इस दृष्टि से ऋग्वेद का नवम मण्डल अति महत्त्वपूर्ण है जिसमें सोमलता के औषधीय गुणों को वर्णित किया गया है। जिसके द्वारा देव एवं मनुष्यों का जीवन बलिष्ठ एवं दीर्घायु वाला होता था।

सोमलता में औषधीय तत्त्व

यह शरीर के विकार रूपी राक्षसों को नष्ट करने में सहायक है। [1] अपने रोगनाशक गुणों के कारण वृद्धावस्था को दूर करता है। इसके सेवन से कार्य निरीक्षण की शक्ति एवं सामर्थ्य में वृद्धि होती है तथा शरीर को क्षीण होने से बचाता है।

यह बुद्धि तथा मन को विकसित करता है।[2] सोमपान करने से व्यक्ति में धैर्य एवं साहस का संचार होता है यह प्राणियों के आध्यात्मिक गुणों का वर्द्धन करने में सहायक होती है और अतिसूक्ष्म विषयों को धारण करने की सामर्थ्य बढ़ाती है।[3]

सोमलता का रस निकालकर उसे कपड़े से छानकर यज्ञ में समर्पित करने से सभी देव प्रसन्न होकर मनोवाञ्छित फल प्रदान करते थे तथा वायुमण्डल में स्थित अनेक हानिकारक जीवाणु विनष्ट होते थे तथा सभी प्राणियों को उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता था इससे मनुष्यों में वीर्य की वृद्धि एवं पुरुषार्थ करने की क्षमता प्राप्त होती थी।[4] सोम में एक प्रकार की स्वाभाविक भैषज्य शक्ति है जो रोगियों का उपचार करती है तथा जो अन्धों को दृष्टि और पंगु को गति प्रदान करती है।[5] यह मनुष्य के अङ्ग-उपाङ्ग में व्याप्त होकर उसे विकसित एवं उन्नत करने में सहायक होती है।

नवम मण्डल में वर्णन किया गया है कि सोमलता को गाय के दूध अथवा दही के साथ मिलाकर इन्द्रदेव को समर्पित किया जाता था जिससे वे असाध्य कार्यों को करने की सामर्थ्य वाले हो जाते थे।[6] सोम सहस्रों धाराओं से रस प्रदान करता है उस रस का सेवन करने से मनुष्य अपने आस-पास के समस्त शत्रुओं से बच जाता है।

भारत-ईरानी काल में आवेस्तिक होम (सोम) का सवन और स्तवन होता था। अवेस्ता में होम (सोम) को एक कार्यदक्ष देवता के द्वारा हैरित नामक पर्वत पर रखा जाता था जिसे एक क्षेमकारी पक्षी पर्वत से लाकर वितरित करता था। ऋग्वेद के अनुसार भी वरूणदेव के द्वारा सोम पर्वतों पर उत्पन्न होता था तथा श्येन पक्षी द्वारा इसे नीचे लाया जाता था। वेद और अवेस्ता दोनों में सोम एक औषधि विशेष है जो प्राणियों के जीवन को सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करती है।[7]

सोम के द्वारा पितर लोगों ने प्रकाश एवं गौवें प्राप्त की थी। सोम पितरों से जुड़ा हुआ पेय पदार्थ है इसलिए इसे 'सोमप्रिय' कहा गया है।[8] इसको हरित वर्ण की औषधियों के रूप में वर्णित किया गया है।[9] सोमलता औषधियों में श्रेष्ठ वनस्पति है समस्त वनस्पतियाँ सोम की प्रजा है।[10] इसकी वृद्धि में वर्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है क्योंकि वृष्टि से यह अत्यन्त तीव्र गति से फैलती थी इसको अग्नि तथा जल की सामर्थ्य वाला बताया गया है।[11] यह जल के साथ मिश्रित होकर अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। उस समय गाय भी इस लता का सेवन करती थी।[12]

यही सोम अन्तरिक्षस्थ जल कणों में समाहित होकर जब पृथिवी पर वृष्टि रूप में आता है था तब प्राणीजगत के लिए कल्याणकारी औषधि होती थी।

ऋग्वेद में सोम का सम्बन्ध अदिति से स्थापित किया गया है क्योंकि अदिति से देवों का जन्म माना जाता है, देवों से वर्षा का और वर्षा से सोम रूप लता का जन्म हुआ इस कारण सोमलता को अदिति की 'दौहित्री' के रूप में वर्णित किया है।[13]

इसका सेवन दिव्य लोग करते थे।[14] वेद में सूर्य के दर्शन करने का आदेश दिया गया है क्योंकि इसके दर्शन से अनेक प्रकार के रोगाणुओं का विनाश होता है जो सोम के पान करने से ही सम्भव है। सोम के द्वारा सामर्थ्य विकसित होती है जो सूर्य दर्शन के लिए आवश्यक है।

सोम के क्रय एवं विक्रय का उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है जिसको लोग उचित मूल्य देकर खरीदते थे, क्योंकि सोम उस समय का अति महत्त्वपूर्ण पदार्थ था।[15] सोम को चोरों से बचाने के लिए किसी रक्षा वस्त्र में बाँधकर ऊँचे स्थान पर टाँगने का वर्णन आया है यह सोम दूध, दही एवं अनाज के साथ मिश्रित करके रखा जाता था देव निर्धारित पात्र का प्रयोग सोमपान के लिए किया करते थे[16] और इस सोम को देवताओं के साथ-साथ उनकी पत्नियों को भी दिया जाता था। विभिन्न देवताओं को अलग-अलग समय में सोमपान कराने का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में सोम को मित्र बनाने का उल्लेख भी मिलता है क्योंकि ऐसा करने से मनुष्य दीर्घायु एवं समृद्ध जीवन प्राप्त करने में समर्थ होता था।

सामवेद में सोम का जो वर्णन किया गया है उसका साम्य ऋग्वेद से अधिक है क्योंकि इसमें जो मन्त्र संकलित किये गये हैं उनका मूल आधार ऋग्वेद ही है सामवेद में सोम को अनेक विशेषणों से अलंकृत करके वर्णित किया गया है। सोम को भूख मिटाने वाले पदार्थ के रूप में उल्लेख किया गया है इसमें सोमपान के लिए सबसे उचित पात्र इन्द्र को बताया गया है क्योंकि इन्द्र में सोमपान के लिए सबसे योग्य गुण विद्यमान है,[17] और वह इसका पान करता है। वह बहुत अधिक सामर्थ्यवान बनता है तथा वृत्र और दानवों का संहार करता है। सामवेद में सोम को मधु नाम से सम्बोधित किया है जो कि माधुर्य का द्योतक है। सोम एक पौधे के रूप में वर्णित है विशिष्ट लोग अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए इसका सेवन करते थे।

औषधीय दृष्टि से वैदिक संहिताओं में अथर्ववेद का स्थान अद्वितीय है जिसमें सोम के विभिन्न पक्षों पर विचार किया गया है इसमें अनेक लताओं के साथ-साथ सोम को भी दर्शाया गया है इसे सुबुद्धि प्रदान करने वाला बताया है और प्रार्थना की गई है कि हे सोम! आप! ब्राह्मणों को श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करो ताकि वे यथार्थ को समझ सकें। इससे प्रार्थना की गई कि वह मनुष्यों को अपकीर्ति, पाप और शत्रु बल से रक्षा करे[18] इसका तात्पर्य यह है कि सोम मनुष्यों को धन, बल, बुद्धि देने वाली लता है जिससे कीर्ति एवं बल बढ़ता है और राक्षसों से रक्षा होती है। सोम सद्बुद्धि प्रदाता है। सद्बुद्धि प्राप्त होने से मनुष्य पाप के मार्ग पर नहीं चलता। सोम के रस में समस्त प्रकार के औषधीय तत्त्व हैं यह मृत्यु रूपी भयङ्कर शत्रु को विनष्ट करता हुआ अमरत्त्व प्रदान करता था। सोम यक्ष्मा (टी.बी.) एवं ज्वर आदि रोगों को विनष्ट करने वाला है।[19] वस्तुतः सोम का जो विशिष्ट रूप ऋग्वेद में प्राप्त होता है वह अन्यत्र प्रायः दुर्लभ है। तथापि अन्य संहिताओं में भी सोम विषयक अवधारणा का दिग्दर्शन होता है। जो सोम के महत्त्व को प्रदर्शित करता है।

विभिन्न क्षेत्रों में सोम की उपयोगिता

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सोम वैदिक संहिताओं में महत्त्वपूर्ण औषधि के रूप में वर्णित है। जोकि स्वाथ्यवर्धक एवं आयुवर्धक होने से देव एवं मनुष्य दोनों का ही प्रिय है। इस कारण यह देवीय एवं भौतिक सभी कार्यों में प्रयुक्त होता रहा है। न केवल औषधीय क्षेत्र में अपितु मानव जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सोम का स्थान अद्वितीय है। विभिन्न क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता परिलक्षित होती है जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है-

भौतिकविज्ञान- पदार्थो के गुण धर्मो का वर्णन भौतिकविज्ञान का विषय क्षेत्र है। इस विषय क्षेत्र के अन्तर्गत सोम के विषय में वेदों में अनेक गुणों का वर्णन किया गया है। पदार्थ विद्या के विचार से सोम बलवर्द्धक, रूचिवर्द्धक, हरितवर्ण, श्लेषमायुक्त, कृमिनाशक, मृदु, लघु, प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि करने वाला, स्निग्ध गुणयुक्त विभिन्न वनस्पतियों के आश्रय से बढ़ने वाला शीतल, वात-पित्त-कफ दोषों को सम करने वाला है। सोम में विज्ञान की भाषा में क्लोरोफिल, प्रोट्रीन, कार्बोहाइड्रेड, वसा, जल आदि तत्त्व पाये जाते जाते हैं यह स्वाद में कषैला होता है।[20]

चिकित्सा विज्ञान- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में सोम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारा शरीर सूर्य और चन्द्र से प्रभावित होता है यहाँ तक कि दाहिनी नासिका से निकलने वाले स्वर को सूर्य स्वर तथा बाई नासिका से निकलने वाले स्वर को चन्द्र स्वर कहा जाता है। पुरुष सूक्त के अनुसार विराट पुरुष के मन से चन्द्रमा की उत्पत्ति हुई है।[21] अतः चन्द्र स्वर मन और हृदय पर प्रभाव डालने वाला होता है। सोम औषधि और चन्द्रमा दोनों का ही नाम वैदिक साहित्य में प्रसिद्ध है, यह औषधि भी चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाली है। प्रकृति में प्रायः देखा जाता है कि जिस ऋतु में जिन रोगों के उत्पन्न होने की परिस्थितियाँ होती हैं उन रोगों में उपचार हेतु तत्-तत् गुणों वाली औषधियाँ भी स्वाभाविक रूप से प्रकट होती हैं। वसन्त ऋतु में सोम औषधि बहुतायत में नव पल्लवों से युक्त होती है। ग्रीष्म में इसकी उपस्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि यह औषधि ग्रीष्म का नाश करने वाली है। यह प्रमाणित तथ्य है कि सोम औषधि की क्षय और वृद्धि चन्द्रमा के विभिन्न कलाओं के आधार पर होती है इससे भी सिद्ध होता है कि सोम शीतलतादायक औषधि है। सोम के

जिन दिव्य गुणों का वर्णन वेद और वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है ऐसे गुण वाली औषधि आज भी अन्वेषण की अपेक्षा रखती है प्रमाणों के आधार पर यह औषधि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली, राजयक्ष्मा जैसे राजरोगों को नष्ट करने वाली, बल-वीर्य और आयु को बढ़ाने वाली त्रिदोषों का शमन करने वाली शीतलतादायक शान्तिदायक तथा बुद्धिवर्द्धिका है। विभिन्न वस्तुओं के साथ मिलाने में इसका गुण धर्म और प्रभाव भी भिन्न-भिन्न होता है जैसे शहद या गुड़ के साथ सेवन करने पर यह कफज रोगों का नाश करने वाला है। घृत और दूध के साथ सेवन करने पर यह पित्तशामक शैत्य से बचाने वाला तथा बुद्धिवर्द्धक होता है। दधि अथवा जल के साथ सेवन करने पर यह वातज रोगों को नष्ट करता है। इस प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में सोम को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आवश्यकता है इसके सही रूप को पहचानने की और यथोचित मात्रा में यथोक्त रोगों के निवारण के लिए प्रयोग करने की।

यज्ञ विज्ञान- यज्ञ विज्ञान भारतीय परम्परा का प्राण है। वेदों में 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित है और इन्द्र असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए यज्ञगत सोम का पान करते हैं। वृष्टि के लिए किये जाने वाले यज्ञ में मुख्य सामग्री सोम को ही बतलाया गया है। सोम को गोदुग्ध गोघृत एवं मधु के साथ मिलाकर यज्ञ में आहुति डालने का विधान है इससे वातावरण सुखद होता है वायु में आर्द्रता का प्रतिशत बढ़ता है। अतः वायु, जल, पृथिवी, अन्न, वृक्ष, वनस्पतियाँ इत्यादि सभी पुष्ट होकर सुखी रहते हैं। अग्नि में डाला गया पदार्थ कई गुना शक्तिशाली होकर वायु और सूर्य किरणों के माध्यम से आकाशमण्डल में व्याप्त होकर जलवायु, वृक्ष, अन्न आदि को बलवान् बनाता है। आचार्य सायण के भाष्यों के अनुसार यज्ञ सामग्री में सोम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है $\sqrt{षुञ्}$ अभिषवे, $\sqrt{षु}$ प्रेरणे, $\sqrt{षु}$ प्रसवैश्वर्ययोः, इन धातुओं से सोम की सिद्धि होने के कारण धात्वर्थ के आधार पर जिसे निचोड़ा जाये, जो प्रेरणा, ऐश्वर्य और उन्नति प्रदान करें उसे सोम कहते हैं जहाँ-जहाँ प्रचुर मात्रा में सोम होगा वहाँ-वहाँ उतनी ही मात्रा में वायु में आर्द्रता होगी, और वृष्टि अधिक होगी इसी निमित्त से यज्ञ में सोम का विधान किया गया है।

आध्यात्मिक विज्ञान- ऋग्वेद के नवम मण्डल में जिस सोम का वर्णन है उसके विशेषण के रूप में **पवमानः** शब्द का प्रयोग किया गया है। √पुञ् धातु से शानच् प्रत्ययान्त पवमानः शब्द यह व्यक्त करता है कि जो पवित्र हो अपने उपासकों को पवित्र करे परन्तु स्वयं किञ्चिदपि अपवित्र न हो उसे पवमान कहते हैं। ऐसा केवल परमात्मा ही है अतः परमात्मा ही पवमान सोम है यह सुनिश्चित होता है। आध्यात्म के अन्तर्गत जीवात्मा परमात्मा और अस्मदादि जीवों के शरीरों का भी वर्णन पाया जाता है। सामवेद के पूर्वार्चिक के पञ्चम अध्याय में पवमान सोम का वर्णन है सामवेद के उस पर्व का नाम भी पवमान पर्व है। सामवेद उपासना का वेद है उपासना के प्रसंग में औषध्यादि का वर्णन अप्रासांगिक ही है। निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यहाँ सोम नाम से परमात्मा का ही वर्णन है। सोम को आनन्ददायक कहा गया है। आनन्द चेतन का धर्म है इस तर्क के आधार पर भी यह सिद्ध होता है कि सोम परमात्मा को कहा गया है। वेद के मन्त्रों में सोम को सम्बोधित करके प्रार्थना की गई है कि हे सोम! तुम हमारी प्रजा तथा हमारे शरीर की रक्षा करो हम कभी भी शत्रु के पराधीन न होवें। इसी प्रकार हे सोम! जैसे गायें यवों में रमण करती है उसी प्रकार तुम हमारे हृदयों में रमण करो।[22] हृदयों में परम पिता परमात्मा ही रमण करते हैं अतः निश्चित तौर पर यहाँ पर सोम के द्वारा परमात्मा का ही वर्णन है। परमात्मा की उपासना आध्यात्मिक चेतना तथा आध्यात्म बल को बढ़ाने वाली होती है जो शत्रुओं पर विजय का मार्ग प्रशस्त करती है इसीलिए आध्यात्म विज्ञान के दृष्टिकोण से सोम नाम से परमात्मा का ही वर्णन है यह सुनिश्चित होता है।

दैवविज्ञान- आचार्य यास्क के निरुक्त के अनुसार जो द्युलोक में रहते हैं उन्हें देव कहते हैं।[23] देव से सम्बन्धित जो कुछ भी कहा जाए उसे ही दैव कहते हैं। वेदों में वर्णन है कि सोम द्युलोक में विराजमान है सोम से ही आदित्य बलशाली होती है नक्षत्रों को भी सोम सुखकर बनाता है।[24] सोम को कुछ मन्त्रों में पश्चिम दिशा तथा कुछ मन्त्रों में उत्तर दिशा का स्वामी बतलाया गया है। पृथिवी का उत्तरी ध्रुव आग्नेय है उसमें विद्युत अग्नि के रूप में विद्यमान है विद्युत का स्वभाव है कि वह जलीय चीजों में अधिक फैलती है। इसलिए वेदों में उसे अप्सरा[25] भी कहा गया है। यह सोम शीतल है सरस है अतः विद्युत व अग्नि के प्रसारण का कारण भी है वेदों में जहाँ पर सोम को इन्द्र के पेय के रूप में दर्शाया गया है वहाँ भौतिक अर्थ में इन्द्र राजा है और सोम औषधि है। दैविक अर्थ में इन्द्र सूर्य है और सोम जलीय तत्त्व हैं। आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र आत्मा है और सोम परमात्मा। दर्शनों के सृष्टि निर्माण प्रक्रिया के क्रम में 'अग्नेरापः' ऐसा कहा गया है, अर्थात् अग्नि जल का कारण तत्त्व है इसलिए आदित्य को बलवान् बनाने में सोम तत्त्व को कारण कहा गया है। जल से अग्नि की शक्ति बढ़ती है और जल से अग्नि की उत्पत्ति होती है यही सोम का दैवीय विज्ञान है।

ऋतु विज्ञान- ऋतुओं का वनस्पतियों के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है।[26] कुछ विशिष्ट ऋतुओं में ही कुछ विशिष्ट वनस्पतियाँ उत्पन्न होती है तथा पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होती है। उन वनस्पतियों को देखकर उन-उन ऋतुओं के आगमन की सूचना भी ऋतु विज्ञान के ज्ञानियों को हो जाती है। सोमलता वसन्त और वर्षा में खूब वृद्धि को प्राप्त होती है उन-उन ऋतुओं में उत्पन्न होने वाली औषधियाँ उस-उस ऋतु के अनुकूल गुण धर्म वाली होती हैं। जिन रोगों की उत्पत्ति जिन-जिन ऋतुओं में होना संभव होता है उन रोगों के निवारण हेतु औषधि भी उन ऋतुओं में तत्-तत् स्थानों पर होती है। भारतवर्ष में ही विभिन्न फल विभिन्न काल में प्राप्त होते हैं। यथा- गुजराती केसर केरी मार्च में उत्तर भारत का दशहरी अगस्त में पका हुआ प्राप्त होता है। जब-जब जहाँ-जहाँ आम पकता है तब-तब वहीं-वहीं जामुन भी पैदा होता है। जहाँ जैसी आवश्यकता होती है वैसे ही फल और सब्जियाँ वहाँ प्राकृतिक रूप से प्राप्त होती है। इस दृष्टिकोण से सोमलता भी ग्रीष्म और वर्षा की परिचायक तथा उस काल में होने वाले रोगों की निवारक सिद्ध होती है। इस प्रकार द्योतित होता है कि सोम न केवल औषधीय क्षेत्र में अपितु मानव-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों

में भी उपादेयता अपना अन्यतम स्थान रखती है। जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में सोम अनिवार्य रूप से प्रतिष्ठित होता प्रतीत होता है।

सन्दर्भ

1. आरे वाधस्व दुच्छुनाम्। ऋ. 9.66.19
2. रूवति भीमो...।। ऋ. 9.70.7।।
3. एष प्रत्नेन जन्मना.।। ऋ. 9.3.9।।
4. अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरि.।। ऋ.. 9.30.5।।
5. प्रान्ध श्रोणं च तारिषद्विचक्षसे।। ऋ.. 10.25.11।।
6. दघ्ना यद् ईम उन्नीता चशसा।। ऋ. 9.81.1।।
7. वै. दे., पृष्ठ 300
8. ऋ. 8.48.13, 10.14.6
9. अचोदसो नो धन्वन्तिन्दवः।। ऋ. 9.79.1
10. सोम नमस्य राजानां यो जज्ञे वीरूधां पतिः।। ऋ. 9.114.2।।
11. अच्छा हि सोमः कलशा.।। ऋ. 9.83.2।।
12. अभि प्रियाणि पवते।। ऋ. 9.72.7।।
13. अन्ये वधूयुः पवते परि.।। ऋ. 9.69.3।।
14. पुनाति ते परिस्रुतं सोम।। ऋ. 9.1.6।।
15. अरूणया पिंगाक्ष्या क्रीणात्येतद् वै सोमस्य रूपम्।। तै.सं. 6.1.67
16. ताभ्यमेतमाश्विनमगृहणवन्तः।। तै.सं. 6.4.91
17. इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वा। सा.पू. 2.10.9
18. अदारसृद भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मरूता मृडता नः।। अथर्व. 1. 20.1
19. अर्थव. 5.21.11, 5.22.1
20. स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम्।। ऋ. 6. 47.1
21. चन्द्रमा मनसोजातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। ऋ. 10.90.13
22. सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा.। ऋ. 1.91.13
23. निरुक्त 7.2
24. अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः। अथर्व. 14.1.2
25. निरुक्त- 5.3
26. मनुस्मृति 2